:: हिन्दी भाषा का उद्भव ::

डॉ० छाया चौबे
असि० प्रोफेसर- हिन्दी विभाग
एम० वी० कॉलेज, बक्सर

अपभ्रंश

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषा की अन्तिम कड़ी और आधुनिक आर्य भाषाओं के सेतु माध्यम की कड़ी है। अपभ्रंश में पूर्व भाषाओं - पालि और प्राकृत के क्रमिक भाषिक तत्व समाहित थे साथ ही कुछ नूतन तत्व विद्यमान जो आधुनिक आर्यभाषाओं के विकसित होने में अमूल्य निधि बन गए। मध्यकालीन आर्यभाषाओं विशेषतः पालि और प्राकृत के लिए जो महत्त्व स्थान एवं उनके लिए जो सम्मानित थी वह अपभ्रंश के लिए नहीं। पालि को भगवान बुद्ध के वचन की रक्षा करने वाली भाषा तो प्राकृत को ज्ञान का साक्षात्कार करने वाली भाषा की संज्ञा दी गयी जबकि अपभ्रंश को च्युति, विकृत और स्खलित अशुद्ध समझे जाने वाली भाषा प्रारम्भ में माना गया। अपभ्रंश शब्द 'भ्रंश' धातु में 'अप' उपसर्ग और 'घञ्' प्रत्यय लगकर बना है। अप उपसर्ग 'भ्रंश' धातु दोनों का अर्थ गिरा हुआ, अधः पतन, विकृत होने के अर्थ में होता है।

सर्वप्रथम 'व्याडि' ने संस्कारहीन शब्दों के लिए अपभ्रंश शब्द का प्रयोग किया, इस तथ्य की सूचना 'भर्तृहरि' के 'वाक्य-पदीयम्' से मिलती क्योंकी 'व्याडि' का ग्रन्थ 'व्याडि संग्रह' अभी तक अप्राप्य है। पंतजलि ने महाभाष्य में भी 'अशब्द' शब्दों के लिए अपभ्रंश शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने भाषा में अशब्द शब्दों की मात्रा भी अल्प मानी है। पंतजलि ने अपभ्रंश को भाषा रूप में न लेकर शब्द के लिए किया है। भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में तीन प्रकार के प्राकृत भाषाओं का उल्लेख है इसमें विभ्रष्ट का भी उल्लेख किया है जिसका सूक्ष्म तात्पर्य अशब्द शब्दों से है। कालिदास ने 'विक्रमोर्वशीयं' के चौथे अंक में अपभ्रंश छन्दों का उल्लेख किया है। इससे पता चलता है कि यह भाषा बहुत पहले से अस्तित्व में थी। 'भामह और दण्डी' ने भी अपभ्रंश भाषा का उल्लेख अपने ग्रन्थों में किया है।

कोई भी भाषा अपने साहित्य स्तर को प्राप्त करने से पूर्व वह क्षेत्रिय रूप एवं वाचिक परम्परा के रूप रही है। अपभ्रंश भाषा का

संबंध आभीर-गुर्जरों की भाषा से लगाया जाता है। ये आभीर ईरान से भारत में आकर उत्तर पश्चिम सीमा पर बस गए और वहीं की भाषा आत्मसात की क्रमशः ये पूर्व एवं दक्षिण की ओर बढ़ते गए और अपनी भाषा में स्थानीय भाषा के तत्वों को आत्मसात करते गए जिसके कारण भाषा में वैविध्य एवं अनेकरूपता पन आया।

भरत के समय अपभ्रंश देशी भाषा से भी लघुतर विभाषा मात्र थी। धीरे-धीरे इसे पहले देशी भाषा की दर्जा मिला। अपने प्रारम्भिक रूप अर्थात 5वीं शदी में इसे प्राकृत देशा भाषा कहा जाता था। दण्डी, भामह जैसे विद्वानों ने संस्कृत, प्राकृत के साथ अपभ्रंश को एक भाषा के रूप में मान्यता दिया है। अपभ्रंश का भाषा समय तो 500ई० से 1000ई० तक माना जाता है परन्तु इसमें साहित्य का प्रारम्भ 7वीं शदी से होता है। अपभ्रंश के प्रथम रचनाकार स्वयंभू को माना जाता है। अपभ्रंश प्रसिद्ध रचनाकार, वैयाकरण हेमचन्द्र का समय लगभग 12वीं शदी है। आठवीं शदी के आसपास सिद्धों के चर्यापद पद प्राकृतमिश्रित अपभ्रंश में रचित है। अपभ्रंश में चरितकाव्य, प्रेमकाव्य, रासोकाव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य एवं स्फुट कविताएँ भी मिलती हैं। स्वयंभू का पउम-चरिउ, पुष्पदंत का महापुराण, शालिभद्र सूरी का भरतेश्वर बाहुबलिरास, सरहपा का दोहाकोष, राम सिंह का पाहुड़दोहा, धनपाल की भविसयत्त कथा आदि अपभ्रंश भाषा में ही रचित है। हेमचन्द्र ने सिद्धहेम एवं काव्यानुशासन नाम से अपभ्रंश का व्याकरण सृजित किया।

अपभ्रंश का व्यापक प्रचार-प्रसार होने के कारण इसमें अनेक क्षेत्रिय भेद एवं उपभेद है। 'उद्योतन सूरी' ने अपभ्रंश के अठारह विभाषाओं का उदाहरण सहित उल्लेख किया है। 'पुरुषोत्तम' ने 'प्राकृतानुशासन' में अपभ्रंश के अनेक भेदों-उपभेदों का विभाजन किया है। मारकण्डेय ने इसके कुल 27 भेद माने हैं। वैयाकरणों ने इसके मुख्यतः तीन भेद स्वीकार किए हैं- 1- नागर 2- उपनागर 3- ब्राचड़। डा० तगारे ने इसके 3 भेद - पूर्वी, पश्चिमी एवं दक्षिणी माना है। डा० नामवर इसके दो भेद मानते हैं- पूर्वी एवं पश्चिमी

Scanned with CamScanner

अपभ्रंश की विशेषताएं :

ध्वनिगत विशेषता -

स्वर स्थिति - पालि, प्राकृत की तरह अपभ्रंश में भी वही स्वर है -

ह्रस्व - अ, इ, उ, ऍ, ऑ
दीर्घ - आ, ई, ऊ, ए, ओ

- अपभ्रंश उकार बहुला भाषा है
- अपभ्रंश में 'ऋ' के स्थान पर अ, इ, उ, ए, रि हो गया -

गृह > गेह
ऋजु > उजु
ऋषि > रिसि

- स-वरों में अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है

पक्षिन > पंखि

- निरानुनासिकीकरण की भी प्रवृत्ति पाई जाती है.

विंशति > बीस

- स्वरलोप एवं स्वर आगम की प्रवृत्ति भी मिलती है.

क्षेत्रिय > खेती
वर्ष > वरिस

व्यंजन -

अपभ्रंश में 'ट वर्ग' की प्रधानता है इसी कारण 'ण' वर्ण का प्रयोग बहुतायत हुआ।

- अपभ्रंश में आदि व्यंजन सुरक्षित रहे परन्तु मध्य व्यंजनों के लोप की भी प्रवृत्ति पाई जाती है -

घाया > घाह
कोकिल > कोअल
गति > गई

आदि व्यंजनों में न, म, श, ष सुरक्षित नहीं रहे बल्कि इनके स्थान पर क्रमशः ठा, ज, स में बदल गए। तीनों - श, स, ष में दन्त स रूप ही पाया जाता है। कहीं कहीं पर अन्तिम व्यंजन के लोप की भी

Scanned with CamScanner

स्थिति है -

राजन > राअ

- संयुक्त व्यंजन प्राय: नहीं पाए जाते हैं उनके स्थान पर व्यंजन द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है -

चक्र > चक्क

दाक्ष > दारक्ख

- व्यंजन विपर्यय भी मिलता है -

लखनअ > नखलउन

व्याकरणिक विशेषताएँ -

वचन - अपभ्रंश द्विवचन हैं - एक वचन, बहुवचन

लिंग - अपभ्रंश में दो लिंगों में ही सभी वर्गीकृत हैं - पुल्लिंग, स्त्रीलिंग।

सभी लिंगो में एक ही प्रकार के विभक्ति प्रत्यय जुड़ने लगे इसीलिए लिंगभेद प्राय: नहीं पाया जाता। नपुंसक लिंग पूर्णतया समाप्त हो और स्त्रीलिंग के रूप भी कम रह गए।

- अपभ्रंश में निर्विभक्ति प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। कहीं-कहीं पर सविभक्तिक रूप भी पाया जाता है

- अपभ्रंश में सर्वनाम के रूप भी कम हुए

- विशेषण में सार्वनामिक विशेषण में - अइस, जइस, कइस, तइस, एत्तिउ, जेत्तिउ रूप पाया जाता है। संख्यावाची विशेषण - एक्क, दु, चउ, पंच, छ, सत्त, अट्ठ, णव, एगुवीस पढम (प्रथम) तइज्जो, पंचवे रूप में पाया जाता है।

— अपभ्रंश में वर्तमान काल के लिए वहीं रूप है जो संस्कृत प्राकृत में परम्परा रूप से चले आ रहे थे। भूतकाल कृदन्त बनी, भविष्यकाल कृदन्तीय एवं परम्परागत ही रहा।

— एव (इस प्रकार) ताम (तब तक) जेम, केम, तेम, निअर, पाद्दि आदि अव्यय शब्दों के रूप हैं।

Scanned with CamScanner

- शब्दावली में तद्भव शब्दों की अधिकयता है परन्तु तत्सम शब्द भी पाए जाते हैं- गगन, कोटि, देव, प्रेम, जल आदि

तद्भव - लक्खी (लक्ष्मी), सवध (सपथ), सामला (श्यामल) हों (मैं), पच्छ (पूछना) वत्थर (फैलाना) आदि

देशज - अपभ्रंश घरेलू या ग्रहस्थी के शब्द देशज रूप से विकसित या प्रयोग में हैं-
चिक्का (थोड़ा), सुपड़ा (ओघड़ा)
थक्कई (थकना) मुग्ग (मूँग)

विदेशी - अरबी-फारसी के मात्र विदेशी शब्द अपभ्रंश में हैं- खुस, नौबति, समाल आदि।

स्रोत ग्रन्थ -

1- हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ० भोला नाथ तिवारी
2- हिन्दी भाषा- डॉ० हरदेव बाहरी
3- भाषा साहित्य और संस्कृति - डॉ० मुकेश अग्रवाल
4- हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य - डॉ० रामकिशोर शर्मा
5- हिन्दी भाषा - डॉ० मीरा दीक्षित

Scanned with CamScanner